नमूना प्रश्न पत्र (हिन्दी पाठ्यक्रम अ के लिए)

समय : 3 घंटे **पूर्णांक : 80**

सामान्य निर्देश –

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका अनुपालन कीजिए –

(1) प्रश्न-पत्र के दो खंड है – खंड 'अ' और खंड 'ब'।

(2) 'अ' में कुल 10 वस्तुपरक प्रश्न पूछे गए है। सभी प्रश्नों के उपप्रश्न दिए गए है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(3) 'ब' में कुल 7 वर्णात्मक प्रश्न पूछे गए है। प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड 'अ' (वस्तुपूरक प्रश्न)

प्र.1 नीचे दो गद्यांश दिए गये है। किसी एक गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **(5 × 1 = 5)**

अहिंसा का अर्थ केवल इतना नहीं है कि हम दूसरे प्राणियों पर दया करें। उन्हें न मारें और किसी को कष्ट नहीं पहुँचाएँ। अहिंसा में मानवीय संवेदनाएँ, जीवन-मूल्य, आदर्श और सात्तिवक वृत्तियाँ आदि बहुत कुछ शामिल है। अहिंसा सदाचार और विचारों की शुद्धता एवं नैतिक सूत्रों का आधार है, सर्वधर्म समभाव की आधारशिला है, समता, सामाजिक न्याय और मानव प्रेम की प्रेरक शक्ति है। सच्ची अहिंसा वह है, जहाँ इंसान के बीच भेदभाव न हो, सारे अंतर हट जाएँ। असल में अहिंसक जीवन जीना बहुत कठिन है, बहुत बड़ी साधना है। महात्मा गाँधी ने कहा है, 'अहिंसा और सत्य का मार्ग जितना सीधा है, उतना ही तंग भी। यह तलवार की धार पर चलने के समान है।'

भगवान महावीर ने दूसरों के दुख दूर करने को 'अहिंसा धर्म' कहा है। उनका जीवन आत्म-साधना और सामाजिक मूल्यों को प्रतिष्ठा दिलाने में व्यतीत हुआ। उनको महसूस हुआ कि आर्थिक असमानता और वस्तुओं का अनावश्यक व अनुचित संग्रह सामाजिक जीवन में असंतुलन पैदा करता है। ऐसी लोभ-वृत्तियों के कारण एक इंसान दूसरे इंसान का शोषण करता है। इसलिए उन्होंने अपरिग्रह पर जोर दिया, ताकि समाज से आर्थिक असमानता मिट सके।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए –

1. अहिंसा आधार नहीं है –

(अ) सात्तिवक वृत्तियों और आदर्श जीवन का (ब) वैचारिक शुद्धता और नैतिक सूत्रों का

(स) प्राणियों पर दया और मानवीय व्यवहार का (द) आर्थिक असमानता व अनुचित संग्रह का।

2. महावीर ने 'अहिंसा धर्म' किसे कहा

(अ) दूसरों को दुख दूर करने को (ब) निर्धनों को दान देने को

(स) सीधे, सँकरे व पैने मार्ग को (द) मंदिर जाने व भजन-कीर्तन को।

3. महावीर के अनुसार सामाजिक जीवन में असंतुलन का कारण है –

(अ) अर्थ का पक्षपातपूर्ण बँटवारा (ब) मानव की ईर्ष्या-द्वेष की प्रवृत्ति

(स) मानव की शोषण एवं प्रताड़न की चतुराई (द) वस्तुओं का अनावश्यक व अनुचित संग्रह।

4. 'अपरिग्रह' का अर्थ है –

(अ) अधिक धन ग्रहण करना (ब) निरर्थक धन का त्याग

(स) आवश्यकता से अधिक धन का त्याग (द) धन संग्रह में लापरवाही।

5. ''अहिंसा का अर्थ केवल इतना नहीं है कि हम दसूरे प्राणियों पर दया करें।'' वाक्य का प्रकार है –

(अ) संयुक्त (ब) मिश्र (स) साधारण (द) सरल

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

अथवा

आज हम स्वतंत्र देश के नागरिक है, जहाँ लोकतंत्र है। देश की बागडोर हमारे द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों के हाथों में है। आज हम महिलाओं की भलाई के बारें में ज्यादा सोच सकते है। पिछली सरकारों ने महिलाओं के कल्याण के लिए अनेक योजनाएँ बनाई। उनकी शिक्षा पर जारे दिया जाने लगा। देश की अनेक गैर-सरकारी संस्थाओं ने उनकी शिक्षा के लिए स्कूल, कॉलेज खुलवाए। जीवन के हर क्षेत्र में उन्हें प्रात्साहित करने हेतु अनेक उपाय सोचे गए और लागू किए गए। महिलाओं को पारिवारिक या सामाजिक उत्पीड़न से बचाने के लिए 'महिला आयोग' का गठन भी कर दिया गया।

आज के समय में महिलाएँ जीवन के हर क्षेत्र में पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है। महिलाएँ शिक्षा के क्षेत्र में भी पुरूषों की अपेक्षा कही आगे जा चुकी है। नौकरियों में भी महिलाओं की संख्या धीरे धीरे बढ़ रही है।

समाज में महिलाओं का वर्चस्व सूर्य के प्रकाश की तरह तेज होता जा रहा है। देश के उच्चपदों पर भी स्त्रियाँ बखूबी कार्य कर रही हैं। पहले तो कुछ ही गिनी-चुनी महिलाएँ थी, जिनका नाम हम गौरव के साथ लेते है, लेकिन अब देश के सर्वोच्चपदों पर महिलाएँ अपना दायित्व सफलतापूर्वक निभा रही है।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए-

1. लोकतंत्र का आशय है-
   (अ) लोक -कल्याणकारी शासन
   (ब) लोकपाल का चुनाव
   (स) संसद का शासन
   (द) चुने हुए प्रतिनिधियों का शासन।
2. महिला आयोग का मुख्य कार्य है महिलाओं को
   (अ) शक्तिशाली बनाना
   (ब) सामाजिक शोषण से बचना
   (स) नौकरियाँ दिलाना
   (द) उच्चपदों पर पहुँचना।
3. उत्पीड़न का अर्थ है-
   (अ) पीड़ित होना
   (ब) पीड़ा से मुक्ति
   (स) पीड़ा पहुँचना
   (द) पीड़ा न होना।
4. 'कंधे-से-कंधा मिलना' का आशय है-
   (अ) प्रतियोगिता करना
   (ब) होड़ में आगे रहना
   (स) स्वास्थ्यरक्षा के उपाय करना
   (द) बराबरी करना।
5. उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है-
   (अ) भारतीय नारी का इतिहास
   (ब) लोकप्रिय महिलाएँ
   (स) महिला-कल्याण के उपाय
   (द) आगे बढ़ती भारतीय नारी।

प्र.2 नीचे दो पद्यांश दिए गए हैं। किसी एक पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- (5 × 1 = 5)

हमें चाहिए सुख न तनिक भी, दुख ही दुख ये प्राण सहें,
व्यथि हृदय में बस करूणा के, भाव-स्त्रोत ही सदा बहें।
घृणा नहीं हो हम किसी से, सभी जनों से प्यार रहे,
कोलाहल-विहीन नित अपना सूना ही संसार रहे।
यदि जग हमसे रहे रूष्ट भी तो भी हमें न रोष रहे,
हो न महत्व-मनोरथ मन में, लद्युता में संतोष रहे।
परम तृषाकुल इन नयनों में, पावन प्रेम-प्रवाह रहे,
केवल यही चाह है उर में, कभी न कोई चाह रहे ।
कोई भी विपत्ति आ जाए, हृदय कभी भयभीत न हो,
कोई भी जीवन का संकट, संकट हमें प्रतीत न हो।
चाहे इस संसार-समर में, कभी हमारी जीत न हो,
किंतु हृदय से दूर हमारे, यह जीवन-संगीत न हो।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए

1. काव्यांश में दुख की चाह क्यों की गई है–

(अ) दुख के बाद सुख मिलेगा | (ब) कोई उसे सुख नहीं देना चाहता
(स) दूसरों के दुख बाँटे जा सकेंगे | (द) उसके व्यथित हृदय में करूणा की धारा बहेगी।

2. कोलाहल-विहीन का क्या तात्पर्य है–

(अ) शोर नहीं हो | (ब) झगड़ा-झंझट न हो | (स) शांति बनी रहे | (द) सूनापन रहे।

3. मन में महत्त्व पाने की इच्छा क्यों नहीं है–

(अ) उसके पास बहुत अधिक धन है | (ब) वह बहुत विद्वान है।
(स) उसे लघुता में ही संतोष है | (द) वह किसी की बराबरी नहीं करना चाहता।

4. काव्यांश में संकट हमें प्रतीत न हों क्यों कहा गया है–

(अ) हममें संकट सहने की क्षमता है | (ब) हमारे हृदय में कोई भय नहीं है
(स) हम बहुत संतोषी है | (द) हम सकटों से घिरे है।

5. काव्यांश का उपर्युक्त शीर्षक होगा–

(अ) दुख की कामना | (ब) प्यार की कामना | (स) संकट की कामना | (द) जीवन-संगीत।

अथवा

जीवन रसमय में निरंतर,
यश जीवन में भरना है।।
रहती नश्वर काया सबकी,
यश से मानव जीता है।
बना अमर यशरूप धरा पर,
वह अमृत घट पीता है।
जीवन जिसका सद्गुण वाला,
उर में बहता झरना है।।

यश जीवन में भरना है।
मिलो अहर्निश होकर निश्छल,
दर्प कभी मत दरसाओ।
भाव रखो श्रद्धा का मन में
मान सदा सबसे पाओ।
डटे रहो तुम सच्चे पथ पर,
अथक परिश्रम करना है।
यश जीवन में भरना है।

निम्नलिखित में से निर्देशानुसार विकल्पों का चयन कीजिए–

1. यशस्वी व्यक्ति का जीवन रहता है–

(अ) यशमय | (ब) रसमय | (स) कष्टमय | (द) अमृतमय।

2. कवि परामर्श देता है कि हम–

(अ) अपनी ज़िद पर अड़े रहें | (ब) बाधा आने पर राह बदलें
(स) अपनी बात दूसरों से मनवाएँ | (द) अपना मार्ग न छोड़ें।

3. व्यक्ति को एक-दूसरे से किस भाव से मिलना चाहिए

(अ) श्रद्धा से | (ब) सज्जनता से | (स) जिंदादिली से | (द) छल कपट से रहित होकर

4. शरीर नश्वर है और अमर है।

(अ) ईश्वर | (ब) सेवा | (स) यश | (द) देशभक्ति

5. भिन्न अर्थवाला शब्द छाँटिए

(अ) दर्प | (ब) यश | (स) मान | (द) कीर्ति

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.3 निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए **(1 × 4 = 4)**

1. वाक्य की विशेषता नहीं है –

(अ) वाक्य पदों का सार्थक समूह होता है। (ब) वाक्य अपने आप में पूर्ण होता है।

(स) वाक्य में प्रयुक्त पदों का कोई निश्चित क्रम नहीं होता। (द) वाक्य में प्रयुक्त पदों में अर्थ प्रदान करने की योग्यता होती है।

2. 'विरोध' के अंतर्गत नहीं आता

(अ) क्रिया और क्रिया का विस्तार (ब) क्रिया का पूरक

(स) कर्म और कर्म का विस्तार (द) कर्ता और कर्ता का विस्तार

3. जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और अन्य आश्रित उपवाक्य हों, उसे कहते हैं

(अ) सरल वाक्य (ब) मिश्र वाक्य (स) संयुक्त वाक्य (द) कुटिल वाक्य

4. 'जैसा करोगे, वैसा पाओगे' रचना के आधार पर वाक्य है

(अ) मिश्र वाक्य (ब) संयुक्त वाक्य (स) सरल वाक्य (द) आश्रित वाक्य

5. 'मैने रोका और वह रूक गया।' का सरल वाक्य में रूपांतरण है

(अ) जब मैने रोका तो वह रूक गया (ब) मेरे रोकने पर वह रूक गया

(स) मैंने रोका इसलिए वह रूक गया (द) क्योंकि मैने रोका इसलिए वह रूक गया।

प्र.4 निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए – (1 × 4 = 4)

1. अकर्मक-सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं का प्रयोग होता है –

(अ) कर्मवाच्य में (ब) कर्तृवाच्य में (स) भाववाच्य में (द) किसी भी वाच्य में नहीं

2. कर्मवाच्य का वाक्य है

(अ) मोहन द्वारा फूल तोडे गए (ब) राघव नहाया (स) इधर न देखा जाए (द) बच्चे चुप नहीं बैठते

3. 'वह पुस्तक नहीं पढता।' का सही वाच्य परिवर्तन है –

(अ) वह पुस्तक नहीं पढ़ सकेगा (ब) उससे पुस्तक नहीं पढ़ी जाएगी

(स) उससे पुस्तक नहीं पढ़ी जाती (द) वह पुस्तक नहीं पढ़ रहा है।

4. भाववाच्य का वाक्य है

(अ) रोगी से चला नही जाता (ब) माँ ने बेटे को उपहार दिए

(स) कलाकार द्वारा मूर्ति बनाई गई (द) नानी कहानी सुनती है।

5. क्रिया का प्रयोग नहीं है।

(अ) कर्तरि प्रयोग (ब) कर्मणि प्रयोग (स) भावे प्रयोग (द) सर्वनाम्नि प्रयोग

प्र.5 निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए **(1 × 4 = 4)**

1. विस्मयादिबोधक के पद-परिचय में बताया जाता है –

(अ) भेद, लिंग, वचन, कारक का उल्लेख (ब) भेद, काल, वाच्य का उल्लेख

(स) भेद एवं भाव का उल्लेख (द) भेद, पुरूष, लिंग भाव का उल्लेख

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2. मेरा छोटा भाई हँस रहा है। रेखांकित पद का परिचय है –

(अ) अकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, वर्तमानकाल, कर्तृवाच्य

(ब) सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, वर्तमानकाल, कर्मवाच्य

(स) अकर्मक क्रिया, स्त्रीलिंग, एकवचन, भूतकाल, कर्तृवाच्य

(द) सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, बहुवचन, भविष्यकाल, कर्मवाच्य

3. 'ताजमहल आगरा में है।' वाक्य में रेखांकित पद है

(अ) व्यक्तिवाचक संज्ञा, कर्ता कारक (ब) जातिवाचक संज्ञा, कर्म कारक

(स) व्यक्तिवाचक संज्ञा, अधिकरण कारक (द) जातिवाचक संज्ञा, कर्ता कारक

4. 'यह साइकिल किसकी है?' वाक्य में रेखांकित पद का पद-परिचय है।

(अ) निश्चयवाचक सर्वनाम, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक

(ब) सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग, 'साइकिल' विशेष्य

(स) पुरूषवाचक सर्वनाम, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक

(द) संबंधवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक

5. वह पुस्तक पढ़ता है। रेखांकित पद का परिचय है

(अ) सार्वनामिक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक (ब) पुरूषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक

(स) निजवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक (द) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक

(i)-(स) (ii)-(अ) (iii)-(स) (iv)-(ब) (iv)-(ब)

प्र.6 निम्नलिखित पाँच भागों में से किन्हीं चार भागों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए **(1 × 4 = 4)**

1. अनुभाव का प्रकार नहीं है

(अ) कायिक (ब) मानसिक (स) सात्विक (द) भौतिक

2. रस की उत्पत्ति को व्यक्त करने वाली आश्रय की चेष्टाएँ कहलाती है।

(अ) विभाव (ब) संचारीभाव (स) अनुभाव (द) स्थायीभाव

3. 'वीर रस' का स्थायीभाव है-

(अ) हास (ब) रति (स) शोक (द) उत्साह

4. 'देवविषयक रति' स्थायीभाव है-

(अ) वत्सल रस का (ब) भक्ति रस का (स) शांत रस का (द) करुण रस का

5. 'राम नास-रस पीजै मनुआं राम नाम-रस पीजै।

तज कुजंस सत्संग बैठ नित हरि चर्चा सुनि लीजै।'

इन पंक्तियों में विद्यमान रस है –

(अ) शांत रस (ब) कृष्ण रस (स) भक्ति रस (द) शृंगार रस

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.7 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए– (1 × 5 = 5)

फ़ादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं, जब हम सब एक पारिवारिक रिश्ते में बँधें जैसे थे, जिसके बड़े सदस्य फ़ादर बुल्के थे। हमारे हँसी–मज़ाक में वह निर्लिप्त शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वह गंभीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो हमें अपने आशीषों से भर देते। मुझे अपना बच्चा और फ़ादर का उसके मुख में पहली बार अन्न डालना याद आता है और नीली आँखों की चमक में तैरता वात्सलय भी जैसे किसी ऊँचाई पर देवदार की छाया में खड़े हो।

1. फ़ादर को बात करना था –

(अ) ज्ञान का ख़ज़ाना प्राप्त करना (ब) कर्म के संकल्प से भरना

(स) आत्मीयता को प्राप्त करना (द) वाक्–कला को सीखना

2. फ़ादर को याद करना था –

(अ) ईश्वर का स्मरण करने जैसा (ब) स्वर्ग का भ्रमण करने जैसा

(स) उदास शांत संगीत सुनने जैसा (द) सुनहरे सपनों में खो जाने जैसा

3. 'परिमल' नाम है –

(अ) एक व्यक्ति का (ब) एक भवन का

(स) एक साहित्यिक संस्था का (द) एक पत्रिका का

4. घर के उत्सवों में फ़ादर की भूमिका रहती –

(अ) अतिथि की (ब) बड़े और पुरोहित की

(स) एक उदासीन व्यक्ति की (द) पारिवारिक सदस्य की

5. लेखक का याद आ रहा है –

(अ) अपना बच्चा (ब) फ़ादर का बच्चे के मुख में पहली बार अन्न

(स) फ़ादर की नीली आँखें (द) देवदार का वृक्ष

प्र.8 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प लिखिए – (1 × 2 = 2)

1. बालगोबिन भगत के गायन की विशेषता नहीं है –

(अ) उनका स्वर बहुत मधुर था

(ब) वे हमेशा कबीर के भजन ही गाते थे

(स) वे गाते समय अपनी खँजड़ी भी बजाते थे

(द) उन्हें स्वर के आरोह–अवरोह का कोई ध्यान नहीं था

2. 'लखनवी अंदाज' पाठ के लेखक के ज्ञान–चक्षु खुल गए–

(अ) जब उन्होंने नवाब की बातें सुनी (ब) जब नवाब साहब को खीरा फेंकते देखा

(स) जब नवाब साहब को खीरा खाए बिना डकार लेते देखा (द) जब सेकेंड क्लास के डिब्बे में यात्रा की

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्र.9 निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर प्रश्नों के सवोधिक उपयुक्त विकल्प चनकर लिखिए- (1 × 5 = 5)

कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की

1. किसके दुख को प्रामाणिक कहा गया है-
(अ) पिता के (ब) माता के (स) लड़की के (द) परिवार के

2. लड़की का कन्यादान करते समय माँ को अनुभूति हो रही थी-
(अ) अत्यंत आनंद की (ब) अत्यंत अकेलेपन की
(स) जैसे उसकी अंतिम पूँजी चली गई है (द) अत्यंत गर्व की

3. लड़की के विषय में सत्य नहीं है -
(अ) लड़की के विषय में सत्य नहीं है (ब) वह सरल और भोली थी
(स) उसे दुख बाँचना नहीं आता था (द) वह बहुत समझदार थी

4. 'पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की' पंक्ति का तात्पर्य है -
(अ) लड़की पढ़ने में असमर्थ थी (ब) वह कम प्रकाश में भी पढ़ लेती थी
(स) वह भावी जीवन का केवल अनुमान लगा रही थी (द) वह अपना भविष्य अच्छी प्रकार जानती थी

5. 'तुकों और लयबद्ध पंक्तियों' का प्रतीकार्थ है -
(अ) अच्छे गीत (ब) सरल कविताएँ
(स) परंपराएँ और सामाजिक नियम (द) कठिन कविताएँ

प्र.10 निम्नलिखित प्रश्नों में से निर्देशानुसार विकल्प चुनकर लिखिए- (1 × 2 = 2)

1. कृष्ण के प्रति गोपियों के अनन्य प्रेम को व्यक्त करने वाला वाक्य नहीं है -
(अ) श्रीकृष्ण गोपियों के लिए हारिल की लकड़ी है
(ब) उन्होंने कृष्ण को मन-वचन-कर्म से अपना लिया है
(स) उन्हें श्रीकृष्ण से नफ़रत हो गई है
(द) वे सोते-जागते रात-दिन कृष्ण का ही नाम जपती है।

2. परशुराम ने सहस्त्रबाहु के समान अपना शत्रु कहा-
(अ) श्रीराम को (ब) लक्ष्मण को
(स) विश्वामित्र को (द) शिव-धनुष तोड़ने वाले को

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

खंड 'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

प्र.11 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 25-30 शब्दों में लिखिए - (2 × 4 = 8)

(अ) कैप्टन को देखकर हालदार साहब अवाक् क्यों रह गए ?

(ब) बालगोबिन भगत प्रचलित मान्यताओं को नही मानते थे। किस घटना के आधार पर यह सिद्ध होता है ?

(स) 'लखनवी अंदाज' कहानी में निहित संदेश पर प्रकाश डालिए।

(द) फादर की उपस्थिति देवदार की छाया के समान क्यों लगती थी ?

प्र.12 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 40-50 शब्दों में लिखिए - (2 × 3 = 6)

(अ) 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात कही गई

(ब) लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई हैं ?

(स) 'उत्साह' कविता में कवि ने बादल का किन अर्थों में प्रयोग किया है ?

प्र.13 निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए- (3 × 2 = 6)

(अ) 'माता का आँचल' पाठ के आधार पर बताएँ कि माँ किस प्रकार भोलेनाथ को कन्हैया बनाती थी और किस युक्ति से खाना खिलाती थी ?

(ब) ''नई दिल्ली में सब था...... सिर्फ नाक नही थी।'' इस कथन के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है ? 'जार्ज पंचम की नाक' पाठ के आधार पर बताइए।

(स) प्रकृति के उस अंनत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति हुई ? 'साना-साना हाथ जोड़ि'...... पाठ के आधार पर बताइए।

प्र.14 दिए गए संकेत बिंदुओ के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए -

(अ) इंटरनेट का महत्व (1 × 5 = 5)

संकेत बिंदु - • इंटरनेट क्या है ? • इंटरनेट की स्थापना • प्रयोग • महत्व।

(ब) बालश्रम

संकेत बिंदु - • समाज के लिए अभिशाप • बच्चों का शोषण • कारण • सरकारी प्रयास • हमारी जिम्मेदारी

(स) ऊर्जा-संरक्षण

संकेत बिंदु - • ऊर्जा-संरक्षण की आवश्यकता • आत्मनिर्भरता का उपाय • हमारी भूमिका • संरक्षण का उपाय।

प्र.15 पटाखों से होने वाले प्रदूषण के प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए अपने मित्र को 80-100 शब्दों में पत्र लिखिए। (1 × 5 = 5)

अथवा

अपने नगर के एक प्रख्यात विद्यालय के छात्रों की अनुशासनहीनता की घटनाओं का उल्लेख करते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य को 80-100 शब्दों में पत्र लिखकर उचित कार्यवाई के लिए अनुरोध कीजिए।

प्र.16 विद्यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा निर्मित हस्तकला की वस्तुओं की प्रदर्शनी के प्रचार हेतु 25-50 शब्दों में विज्ञापन-लेखन कीजिए। (1 × 5 = 5)

अथवा

किसी प्रसिद्ध मोबाइल फोन की बिक्री के लिए 25-50 शब्दों में आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए।

प्र.17 रक्षाबंधन पर मित्रों को भेजने के लिए 30-40 शब्दों में शुभकामना संदेश-लेखन कीजिए। (1 × 5 = 5)

अथवा

'बैसाखी' पर मित्रों को भेजने के लिए 30-40 शब्दों में शुभकामना संदेश-लेखन कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उत्तरमाला

खंड 'अ' (वस्तुपूरक प्रश्न)

उ.1	1. (द)	2. (अ)	3. (द)	4. (स)	5. (ब)
			अथवा		
	1. (द)	2. (ब)	3. (स)	4. (द)	5. (द)
उ.2	1. (द)	2. (स)	3. (स)	4. (अ)	5. (द)
			अथवा		
	1. (ब)	2. (द)	3. (द)	4. (स)	5. (अ)
उ.3	1. (स)	2. (द)	3. (ब)	4. (अ)	5. (ब)
उ.4	1. (ब)	2. (अ)	3. (स)	4. (अ)	5. (द)
उ.5	1. (स)	2. (अ)	3. (स)	4. (ब)	5. (ब)
उ.6	1. (द)	2. (स)	3. (द)	4. (ब)	5. (स)
उ.7	1. (ब)	2. (स)	3. (स)	4. (ब)	5. (ब)
उ.8	1. (द)	2. (स)			
उ.9	1. (ब)	2. (स)	3. (द)	4. (स)	5. (स)
उ.10	1. (स)	2. (द)			

खंड 'ब' (वर्णात्मक प्रश्न)

उ.11

(अ) हालदार साहब की कल्पना में सुभाषचंद्र बोस की मूर्ति पर चश्मा लगाने वाला 'कैप्टन' नाम का आदमी खूब लंबा-लगड़ा फौजी जवान था। उन्हें लगा कि उसकी कोई दुकान होगी, जहाँ से चश्मे लाकर वह नेता जी का लगा देता है, परन्तु उन्होंने देखा कि कैप्टन नाम का चश्मेवाला बिल्कुल मरियल सा बूढ़ा और लँगड़ा व्यक्ति है। उसके सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा था। उसके एक हाथ में संदूकची और दूसरे हाथ में बाँस पर लटके चश्मे थे। वह घूम-घूमकर चश्में बेचा करता था: क्योंकि उसके पास कोई दुकान नहीं थी। अपनी कल्पना के विपरीत यह सब देखकर हालदार साहब अवाक रह गए।

(ब) भगत जी प्रचलित मान्यताओं को आँख बंद करके नहीं मानते थे। वे जानते थे कि इस समाज में पत्नी को पति की चिता में आग देने की अनुमति नहीं है, फिर भी उन्होंने अपनी पुत्रवधू से अपने बेटे की चिता में आग दिलवाई। यहाँ तक कि उसे पुनर्विवाह करने की आज्ञा देकर भाई के साथ भेज दिया। अपने इकलौते बेटे की मृत्यु पर शोक नहीं उत्सव मनाया। उनके अनुसार उसके बेटे की आत्मा का मिलन परमात्मा से हुआ है तो यह बात खुशी मनाने की है। वे उसके मृत शरीर के सामने बैठकर भक्ति पद गाते रहे। इन तीनों ही घटनाओं से सिद्ध होता है कि भगत समाज में प्रचलित मान्यताओं को नहीं मानते थे।

(स) 'लखनवी' अंदाज पाठ में लेखक ने नवाब साहब के माध्यम से नवाबी परंपरा की झूठी आन-बान दिखाने की प्रवृति पर व्यंग्य किया है, जो वास्तविकता से बेखबर एक बनावटी जीवन-शैली के आदी हैं। आज के समय में भी नवाब साहब के रूप में ऐसी परजीवी संस्कृति को देखा जा सकता है। नवाब साहब का खीरे को मात्र सूँघकर स्वाद प्राप्त होने और उसे बिना खाए खिड़की से फेंककर पेट भर जाने का दिखावा करना - उनकी बनावटी रईसी को दर्शाता है। उनका सेकेंड क्लास में यात्रा करना इस बात को प्रमाणित करता है कि नवाब साहब की नवाबी ठसक तो नहीं रहीं, परंतु फिर भी वे अपने हाव-भाव और क्रियाकलापों से झूठी शान दिखाते हैं, जिसका कोई महत्व नहीं है। इस कहानी में उन ढोंगी लेखकों पर व्यग्य किया गया है, जो स्वयं को नई कहानी का लेखक कहते हैं और विचार, घटना और पात्र के बिना ही कहानी लिखने का दावा करते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(द) देवदार हिमालय पर 6,000 फुट से 8,000 फुट तक की ऊँचाई पर पाया जाने वाला एक बहुत बड़ा पेड़ होता है। इसकी लकड़ी सुन्दर, हल्की व सुगंधित होती है। यह अपनी मजबूती के लिए प्रसिद्ध है। इसमें धुन नहीं लगता है।

फादर में भी देवदार के समान सभी गुण थे। उनका व्यवहार सुगंध देने वाला अर्थात् अच्छा था। विचारों से फादर सुदृढ़ थे। फादर सन्यासी थे, जो पवित्रता का प्रतीक है। इन सब कारणो से फादर की उपस्थिति लेखक को दावेदार की छाया जैसी लगती थी।

उ.12

(अ) यहाँ वचन की मर्यादा न रहने की बात की जात रही है। हमारे समाज में वचन की बहुत मर्यादा रही है। इसके लिए लोगों ने प्राण भी दे दिए है। कृष्ण ने गोपियों को वापस आने का वचन दिया था, जिसके सहारे वे धैर्य धारण किए हुए थी। कृष्ण ने वापस न आकर वचन की मर्यादा को तोड़ दिया है। इसी कारण अब गोपियों का धैर्य भी टूट रहा है।

(ब) लक्ष्मण ने शूरवीर या वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई –

(क) शूरवीर या वीर योद्धा देवता, ब्राह्मण, भगवान् के भक्त और गाय पर वीरता नहीं दिखाते है।

(ख) वीर योद्धा रणभूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन करते है, वे अपनी वीरता का बखान नहीं करते है।

(ग) धीरता और संतोष वीरों का अनन्य गुण होता है, उन्हें अकारण ही क्रोध नहीं आता और यदि आता भी है तो वे क्रोध में भी विवेक नहीं खोते है।

(घ) गाली देना कायरों और दुर्बलों का अस्त्र है, वीर योद्धा दूसरों को गाली देकर अपमान नहीं करते, भले ही वह शत्रु ही क्यों न हों।

(स) 'उत्साह' कविता में कवि ने बादल का निम्नलिखित अर्थो में प्रयोग किया है –

(क) अपने गर्जन-तर्जन अर्थात् आह्वान से हताश निराश शोषित और परतंत्र भारतीयों में उत्साह और क्रांति की भावना भरने वाले क्रांतिकारी के अर्थ में।

(ख) अपने अंदर निहित वज्र (शब्द शक्ति) से जीर्णता का विध्वंस कर नूतन कविता के सृजन से नवजीवन देने वाले कवि के अर्थ में।

(ग) अपनी शीतल जलधारा से तप्त धरा को शीतलता प्रदान करने वाले परोपकारी के अर्थ में।

उ.13

(अ) माँ भोलानाथ को जबरदस्ती पकड़कर पहले नहलाती, फिर उसके सिर में बहुत सारा कड़वा तेल डालकर चोटी गूँथतीं और उसमें फूलदार लट्टू बाँधती थीं। उसे कन्हैया की तरह ही रंगीन कुर्त्ता टोपी पहनाकर काजल की बिंदी लगा देती थी। इस प्रकार वे उसे कन्हैया बना देती थी। भोलानाथ अपने पिता के साथ भोजन करके तृप्त हो जाता था, लेकिन माँ को संतुष्टि नहीं होती थी। वे फिर से उसे खिलाने की जिद करती। दही-भात सानकर चिड़ियाँ, कबूतर, मैना, तोता, हंस आदि के नाम से उसके ग्रास बनातीं और भोलानाथ से कहती कि जल्दी से खा लो, वरना ये सब उड़ जाएँगे। लेखक उनके बहकावे में आ जाता और पेट भरा होने पर भी बहुत सा खाना खा जाता था। इस युक्ति से माँ उसे खाना खिलाती थीं।

(ब) इस कथन में 'नाक' मान सम्मान की प्रतीक है। इसके माध्यम से लेखक बताना चाहता है कि सरकारी तंत्र ने रानी एलिाबेथ के स्वागत का पूरा प्रबंध कर लिया था। सत्कार की सारी सामग्री दिल्ली में उपलब्ध थी, लेकिन न तो प्रबंध करने वाले सरकारी तंत्र की नाक थी और न ही ब्रिटिश शासकों की। सरकारी तंत्र की नाक (आत्मसम्मान) इसलिए नहीं थी क्योंकि वह उन अंग्रेज शासको का स्वागत सत्कार कर रहा था।, जिन्होने उन्हें सैकड़ों वर्षो तक गुलाम रखा और उन पर तरह-तरह के अत्याचार किए। ब्रिटिश शासकों की नाक (मान) वहाँ इसलिए नहीं थी, क्योंकि जॉर्ज की मूर्ति की नाक काटकर दिल्ली की जनता ने संकेत दे दिया था कि अब अंग्रेजों का यहाँ कोई मान-सम्मान नहीं रहा है।

(स) प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरुप को देखकर लेखिका को जो अनुभूति होती है, उसे लेखिका ने निम्नलिखित शब्दों में प्रकट किया है "आदिम युग की किसी अभिशप्त राजकुमारी-सी मैं भी नीचे बिखरे भारी-भरकम पत्थरों पर बैठ झरने के संगीत सुनने लगी। थोड़ी देर बाद ही बहती जलधारा में पाँव डुबोया तो भीतर तक भीग गई। मन काव्यमय हो उठा। वह सत्य और सौंदर्य को छूने लगा।"

जीवत की अनंतता का प्रतीक वह झरना ... उन अद्भुत-अनूठे क्षणों में मुझमें जीवन की शक्ति का अहसास हो रहा था। इस कदर प्रतीत हुआ की जैसे मैं स्वयं भी देश और काल की सरहदों से दूर बहती धारा बन बहने लगी हूँ। भीतर की सारी तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ इस निर्मल धारा में बह गई। मन हुआ कि अनंत समय तक ऐसे ही बहती रहूँ ... सुनती रहूँ इस झरने की पुकार को।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

उ.14

(अ) इंटरनेट का महत्व

संकेत-बिंदु – * इंटरनेट क्या है? * इंटरनेट की स्थापना * प्रयोग * महत्व।

इंटरनेट दुनियाभर में अलग-अलग जगहों पर लगे कंप्यूटरों को जोड़कर सूचना की आवाजाही के लिए बनाई गई एक विशेष प्रणाली है। इसकी स्थापना अमेरिका में एक विशेष परियोजना के तहत हुई थी। उस समय संचार की इस सेवा का उद्देश्य था-परमाणु हमले की स्थिति में संचार का नेटवर्क बनाए रखना। लेकिन जल्दी ही यह सुविधा रक्षा शोध केंद्रों से निकलकर व्यावसायिक क्षेत्रों पहुँच गई। आज इंटरनेट पर कई सेवाएँ उपलब्ध है; जैसे -ई-मेल (इलेक्ट्रॉनिक मेल); जिसके माध्यम से काई भी सूचना, संदेश, पत्र, पता दुनिया के किसी भी कोने में तत्काल पहुँचाया जा सकता है। डब्ल्यू-डब्ल्यू-डब्ल्यू (वर्ल्ड वाइड वेब) डाटा बसे के द्वारा कोई भी उपभोक्ता इच्छित सूचना प्रापत कर सकता है। शुरू-शुरू में इंटरनेट पर केवल लिखित सामग्री ही प्राप्त होती थी, लेकिन इब इस पर चित्र, ध्वनि, कार्टून आदि सभी प्रकार की सामग्री उपलब्ध हो जाती है। इसके अलावा इंटरनेट की अन्य सुविधाओं में 'होमपेज' है। इसमें कोई भी व्यक्ति, कंपनी या संस्था अपने बारे में विवरण देकर एक तरह से विज्ञापन कर सकती हैं। 'होमपेज' से जानकारी लेने को 'हिट' कहा जाता है। 'नेट' में सूचना भंडार, विश्वकोश, पुरानी-नई लोकप्रिय पुस्तकें, विशेष लेख, शोध पत्र, अखबारों की कतरनें, पूरे अखबार एवं पत्रिकाएँ कोर्ट के फैसले आदि के विशाल सूचना भंडार में से कोई भी उपभोक्ता मनचाही सूचना ले सकता है। इसके अतिरिक्त खेल बुलेटिन तथा फाइल ट्रांसफर प्रोटोकॉल (एफ.टी.पी.) है, जिसके जरिए हम दूर बैठे किसी व्यक्ति से जानकारी अपनी फाइल में ले सकते है और अपनी जानकारी उसे दे सकते हैं। यहाँ तक कि ऐतिहासिक महत्व के दस्तावेज़, गीत, कविताएँ, टी.वी. कार्यक्रमों के सार संक्षेप आदि भी हम अपनी फाइल में ले सकते हैं।

(ब) बालश्रम

संकेत-बिंदु – * समाज के लिए अभिशाप * बच्चों का शोषण * कारण * सरकारी प्रयास * हमारी जिम्मेदारी।

बचपन मनुष्य के जीवन का सबसे सुंदर और प्यारा समय है, जब न किसी बात की चिंता होती है, न कोई ज़िम्मेदारी। बस, खेलना-कूदना, पढ़ना-हँसना और आनंद उठाना, परंतु सभी का बचपन ऐसा ही हो, यह ज़रुरी नहीं । आज समाज की तस्वीर बिलकुल उल्टी है। छोटे बड़े सभी शहरों या कहिए हर गली, हर मोड़ पर आपको बच्चे मजदूरी करते मिल जाएँगे। इन बच्चों का समय स्कूल में कॉपी किताबों और दोस्तो के बीच नहीं, बल्कि होटलों, घरों, उद्योगों बरतनों, झाडू और औजारों के बीच बीतता है। अधिकांश बच्चे घरेलू नौकरों के रुप में कार्य करते है, जहाँ इन्हे दो समय का भरपेट भोजन भी नहीं मिलता है। नाममात्र का वेतन देकर दिन रात काम कराया जाता है, यहाँ तक कि मारा पीटा भी जाता है। बड़ी संख्या में बच्चे कारखानों में काम करते है, जहाँ उन्हे श्रमसाध्य कार्य करने व अस्वास्थ्यकर वातावरण में काम करने को विवश किया जाता है। आपने प्राय: छोटे बच्चों को कूड़े के ढेरों से प्लास्टिक की बोतलें, काँच, लोहा इकट्ठा करते देखा होगा। छोटी सी उम्र में इन बच्चों को गलीचे बुनने, चूडियों के कारखाने पटाखे बनाने के कारखाने जैसी खतरनाक स्थितियों में काम करना पड़ता है। भारत में इस भयावह स्थिति का एकमात्र कारण है गरीबी और अशिक्षा । अशिक्षित परिवारों में बच्चों की अधिक संख्या उन्हे रोटी जुटाने के लिए काम करने पर मजबूर कर देती है। पिछले कुछ दशकों से बालक्षम के विरूद्ध आवाज उठाई जा रही है। बालश्रम को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक गंभीर मुद्दे के रूप में देखा गया है। क्योकि बालश्रम बच्चे के भविष्य के केवल हानि ही नहीं पहुँचाता, उसे नष्ट कर देता है। यह मानव अधिकारों का उल्लंघन है। हमारे देश के बालक्षम पर रोक लगाने के लिए स्वतंत्रता के पश्चात् अनेक कानून बनाए गए सविंधान के नीति निदेशक तत्वो में राज्यो को निर्देश दिया गया है कि वे उसे कानून बनाएँ, जिनसे 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को ऐसे कार्य स्थल या कारखाने में न रखा जाए, जो खतरनाक हों। बालमजदूरों की स्थिति में सुधार के लिए सरकार ने सन् 1986 ई0 में चाइल्ड लेबर एक्ट बनाया, जिसके तहत बालमजदूरी को अपराध माना गया। इन सभी प्रयोगों के बावजूद बालक्षम भारत एक चुनौती है। इसकी समाप्ति के लिए आवश्यकता है समाज को जागरुक और बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाने की।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(स) ऊर्जा संरक्षण

संकेत बिंदु : ऊर्जा संरक्षण की आवश्यकता आत्मनिर्भरता का उपाय हमारी भूमिका संरक्षण का उपाय।

किसी भी राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए यह परमावश्यक है। उसके यहाँ ऊर्जा का अधिकाधिक उत्पादन किया जाए : क्योकि ऊर्जा ही देश के विकास को गति प्रदान करती है। ऊर्जा उत्पादन से भी अधिक आवश्यक है उपलब्ध ऊर्जा का समुचित सरंक्षण । उद्योगों का चलाने के लिए ऊर्जा दो प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त होती है। नवीकरणीय तथा परंपरागत। दोनों ही संसाधनो से ऊर्जा प्राप्त करने की प्रक्रिया अत्यंत लंबी तथा खर्चीली होती है। इसलिए ऊर्जा का हमे आवश्यकतानुसार ही प्रयोग करना चाहिए। आज जो देश आर्थिक विकास के शिखर पर है, उनका सर्वप्रमुख कारण ऊर्जा के क्षेत्र में उनकी आत्मनिर्भरता है। ऊर्जा की बचत करके ही हम लंबे समय तक अधिकाधिक कल कारखाने चला सकते है, जिससे उत्पादन में उत्तरोत्तर वृद्धि हो सकेगी। औद्योगिक उत्पादन की मात्रा पर ही किसी देश की प्रगति करती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ऊर्जा की बचत का दायित्व हम सभी का है यदि हम छोटी छोटी सावधानियाँ बरते तो ऊर्जा की बचत के लिए अपनाए जाने वाले कुछ उपाय इस कार है। बिजली का आवश्यकतानुसार प्रयोग, ऐसी तकनीक वाले उपकरणो का प्रयोग, जो कम ऊर्जा खपत करते हों, निजी वाहनों के स्थान पर सार्वजनिक वाहनों का अधिक से अधिक प्रयोग आदि वस्तुत: ऊर्जा की बचत एवं संरक्षण में ही हमारा भविष्य उज्जवल, सुरक्षित एवं संरक्षित है।

उ.15 पटाखों से होने वाले प्रदुषण के प्रति ध्यान आकर्षित करते हुए मित्र को पत्र –

सी–51, प्रताप विहार

रूड़की।

दिनांक : 12 अक्टूबर 20××

प्रिय मित्र सुबोध,

नमस्कार।

मैं परिवार सहित कुशलतापूर्वक हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी अपने परिवार सहित कुशलतापूर्वक होंगे। दीपावली आने वाली है आशा है आप पटाखे खरीदने की तैयारी कर रहें होगें। मैं जानता हूँ कि आपको पटाखे चलाने का बहुत शौक है। मित्र! मैं आपको बताना चाहता हूँ कि पटाखे पर्यावरण प्रदूषण को सबसे अधिक बढ़ाते है। इनसे ध्वनि प्रदूषण और वायु प्रदूषण दोनों ही बढ़ते है। हृदय रोगियो की इनकी तेज ध्वनि से बहुत खतरा होता है। इनका धुआँ दमा रोगियों के लिए मौत बन जाता है। ये आँखों के लिए भी बहुत हानिकारक है। इन सब बातों का देखते हुए हमारे परिवार ने इस दीपावली पर पटाखे न जलाने का संकल्प किया है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप भी पर्यावरण रक्षण के लिए पटाखें नहीं जलाएँगें और दूसरो को भी इस बात के लिए प्रेरित करेंगे। मेरी और से आपके माता पिता को चरणस्पर्श और नीलू को प्यार।

आपका मित्र

अ ब स

अथवा

विद्यालय के छात्रों की अनुशासनहीनता की घटनाओं का उल्लेख करते हुए विद्यालय के प्रधानाचार्य का पत्र –

256, सेक्टर–12

अंबाला (हरियाणा)

दिनांक : 5 अप्रेल 20××

सेवा में,

प्रधानाचार्य,

भारतीय पब्लिक स्कूल,

सेक्टर–12

अंबाला (हरियाणा)।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

विषय : छात्रों की अनुशासनहीनता रोकने हेतु अनुरोध पत्र।

महोदय,

मैं सेक्टर–12 का एक जिम्मेदार नागरिक हूँ और आपका ध्यान आपके विद्‌यालय के छात्रों की अनुशासनहीनता व अभद्र व्यवहार की और दिलाना चाहता हूँ। आपके विद्यालय के कुछ छात्र प्रतिदिन छुट्‌टी के पश्चात् बए स्टैंण्ड पर एक समूह में एकत्र होते हैं और हुडदंग मचाते हैं। वे जोर जोर से चीखते हैं और आने जाने वालों को मजाक उड़ाते है। बस स्टैण्ड पर छात्राओं का आना जाना तो उन्होंने दूभर कर दिया है। वे उन्हें छेड़ते है, अभद्र व्यवहार करते है तथा फब्तियाँ कसते है। कई बार जिम्मेदार लोगों ने उन्हें रोकने और समझाने का प्रयत्न किया तो वे उन्हें भी अपशब्द बोलने लगे। वे बसों के पीछे लटक जाते है, फिर अचानक कूदकर सड़क पर आ जाते है। महोदय, एक प्रतिष्ठित स्कूल के विद्‌यार्थियों को ऐसा व्यवहार शोभा नहीं देता। इससे केवल उनकी ही नहीं, स्कूल की छवि भी खराब होती है, इन छात्रों की पहचान कराकर उनके विरूद्‌ध कड़ी अनुशासनात्मक कार्यवाही करने की आवश्यकता है। आपसे अनुरोध है कि आप इस संबंध में तत्काल कोई कार्यवाही करें।

धन्यवाद सहित

प्रार्थी

विवेक बंसल

उ.16 विद्‌यालय के वार्षिकोत्सव के अवसर पर विद्‌यार्थियो दुबारा निर्मित हस्तकला की वस्तुओं की प्रदर्शनी के प्रचार हेतु विज्ञापन

अथवा

'कॉल–मी' मोबाइल फोन का विज्ञापन

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

17. **रक्षाबंधन पर शुभकामना संदेश-लेखन-**

प्रेषक : क0ख0ग0

दिनांक : 7 अगस्त, 20××

बहना का सम्मान है राखी,
भाई का अरमान है राखी।
प्राणों से भी बढ़कर है जो,
ऐसा स्वाभिमान है राखी।
रक्षाबंधन की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

अथवा

बैसाखी पर शुभकामना संदेश-लेखन-

प्रेषक : क0ख0ग0

दिनांक : 14 अप्रैल, 20××

दिनांक : 7 अगस्त, 20××

वाहे गुरु से खालसा की सौगात पाई,
'सिंह' बन गए सारे सिख भाई।
धरती माता फसलों की दौलत भर लाई,
भँगाड़ा पाओ खुशी मनाओं, बैसाखी आई।

बैसाखी की लख-लख बधाइयाँ।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in